

जीवन विद्या परिचय

प्रस्तुतकर्ता - अशोक कुमार गोपाला

पृष्ठभूमि

- ▶ जीवन विद्या, मानव-मानव संबंध व मानव-प्रकृति संबंध में सहअस्तित्व प्रमाणित करते हुए, सुख-शांति पूर्वक जीने का प्रस्ताव है।
- ▶ जीवन विद्या, मानव जाति के सम्मुख **मानव के अध्ययन एवं मानवीयता के संरक्षण** हेतु समझदारी पूर्वक जीने का प्रस्ताव है।
- ▶ यह प्रस्तुति मैं अशोक गोपाला, अध्ययनकर्ता के अधिकार से प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जीवन विद्या - क्या है

- ▶ जीवन विद्या, मध्यस्थ दर्शन पर आधारित है जिसके प्रणेता श्री ए. नागराज (1920-2016, अमरकंटक) हैं।
- ▶ यह सहअस्तित्ववादी विचार के लिए एक प्रस्ताव है।
- ▶ यह सहअस्तित्ववादी व्यवहार (मानव-मानव संबंध में सहअस्तित्व) के लिए एक प्रस्ताव है।
- ▶ यह सहअस्तित्ववादी कार्य (मानव-प्रकृति संबंध में सहअस्तित्व) के लिए एक प्रस्ताव है।
- ▶ यह प्रयोजनपूर्ण तर्क सम्बद्ध शिक्षा के लिए एक प्रस्ताव है।

जीवन विद्या - क्या नहीं है

- ▶ यह कोई संप्रदाय नहीं है।
- ▶ यह किसी भी पारंपरिक दर्शन, विचारधारा अथवा धर्म पर आधारित नहीं है।
- ▶ यह धनार्जन अथवा यशार्जन का माध्यम नहीं है।
- ▶ जीवन विद्या के सभी शिविर सामाजिकता में, से, के लिए धन मुक्त विधि से प्रस्तुत किए जाते हैं।

प्रस्तावना

- ▶ मनुष्येत्तर प्रकृति परस्पर सहयोग पूर्वक स्वयं-स्फूर्त विधि से व्यवस्था है। यही सहअस्तित्व है। [व्यवस्था = नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक होना व रहना]
- ▶ मानव (व्यक्ति, परिवार, समाज, परंपरा) भी प्रकृति का अभिन्न अंग है एवं व्यवस्था में जीने के अवसर व साधन मानव को प्राप्त हैं।
- ▶ मानव परंपरा में सभी उपलब्धि संयुक्त आचरण पूर्वक ही है। सहयोग = परस्परता में उपयोगी होना, पूरक होना।
- ▶ मानव अज्ञानतावश असहयोग (शोषण) करता है। शोषण = परस्पर आदान-प्रदान में अधिक लेना, कम देना।

प्रस्तावना

- ▶ स्वयंस्फूर्त निर्णय पूर्वक ही मानव प्राप्त साधनों का सदुपयोग कर सकता है।
- ▶ ऐसा करने के लिए, सहअस्तित्व का अध्ययन करना अनिवार्य है। सहअस्तित्व की अवधारणा ही समझदारी है।
- ▶ ऐसी समझदारी पूर्वक जीना ही व्यवस्थित जीना है। व्यवस्था में, से, के लिए जीना ही सुख है।
- ▶ इस क्रम को पहचानकर प्रमाणित करना ही मानव (व्यक्ति, परिवार, समाज, परंपरा) सहज प्रयोजन है।

मानव कर्म (Human Action)

	कृत (Doing)	कारित (Making Others Do)	अनुमोदित (giving consent)
कायिक Bodily Activity			
वाचिक Verbal Activity			
मानसिक Mental Activity			

● नौ प्रकार से मानव कर्म

मानव परंपरा की समीक्षा

	वर्तमान स्थिति (नासमझीवश)	प्रस्तावित (समझदारी पूर्वक)
व्यक्ति	समस्या ग्रस्त	समाधान
परिवार	क्लेश ग्रस्त	समृद्धि
समाज	भय ग्रस्त	अभय
प्रकृति	असंतुलन की ओर	सहअस्तित्व

पारंपरिक विचारधाराएँ

- ▶ **भौतिकवाद:** भौतिक वस्तु ही मूल सत्य, भौतिक वस्तु का क्रियाकलाप ही संसार, परस्पर संघर्ष ही सिद्धांत।
- ▶ **आदर्शवाद:** ईश्वर ही मूल सत्य, ईश्वरीय क्रियाकलाप ही संसार, ईश्वरीय कृपा ही सिद्धांत

तीन सच्चाइयाँ

- ▶ मैं हूँ।
- ▶ संसार है।
- ▶ मैं सुख पूर्वक जीना चाहता हूँ।

तीन मौलिक प्रश्न

- ▶ मैं क्या हूँ?
- ▶ संसार क्या है?
- ▶ सुख पूर्वक जीना क्या है?

ज्ञान चर्चा प्रचलित व प्रस्तावित

	प्रचलित		प्रस्तावित
	भौतिकवाद तर्क संगत, प्रयोजन विहीन	आदर्शवाद प्रयोजन सहित, तर्क विहीन	सहअस्तित्ववाद प्रयोजन सहित, तर्क संगत
मैं?	शरीर	आत्मा	मानव = जीवन + शरीर जीवन ज्ञान
संसार?	संसाधन	माया	सहअस्तित्व रूपी व्यवस्था सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान
सुख पूर्वक जीना?	भोग	मोक्ष	मानवीयता पूर्ण आचरण मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान
कार्यक्रम	सुविधा, संग्रह	भक्ति, विरक्ति	समाधान समृद्धि प्रमाणित करना
समाजिक परिणाम	व्यक्तिवाद, संघर्ष, युद्ध	समुदायवाद, संघर्ष, युद्ध	अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था

मानव परंपरा में उपलब्धियाँ - भौतिकवादी विधि से

- ▶ सामान्याकांक्षा, महत्वाकांक्षा के साधनों व संबंधी तकनीकी का विकास एवं प्रचुरता, जिनसे मानव परंपरा सुविधा संपन्न होना।
- ▶ शिक्षा विधा का विस्तार एवं सुलभ होना।
- ▶ तकनीकी शिक्षा में प्रगति होना।
- ▶ अधिक उत्पादन के लिए समाजिक रूढ़ियों का टूटना।

मानव परंपरा में उपलब्धियाँ - आदर्शवादी विधि से

- ▶ उच्च लक्ष्य, सर्वशुभ कामनाएँ, समृद्ध भाषा व (ईश्वर, न्याय, धर्म, सत्य, अखण्डता, सार्वभौमिकता, अक्षुण्णता जैसे) उत्कृष्ट अवधारणाएँ, जिनसे मानव मानसिक व अध्यात्मिक पक्ष को विकसित करने में प्रयासरत हुआ।
- ▶ सत्य अनवेषी प्रवृत्तियों (साधू, संत, उपासक आदि) को सम्मान मिलना।
- ▶ परंपरा में ज्ञान 'चर्चा व शोध' का मुद्दा बनना।

मानव परंपरा में त्रुटियाँ - भौतिकवादी विधि से

- ▶ शिक्षा व तकनीकी का विकास व्यापार व युद्ध को समर्पित होना।
- ▶ मानव परंपरा में द्रोह, विद्रोह, शोषण व युद्ध को विधि मान लेना।
- ▶ साम, दाम, दंड, भेद को नीति मान लेना।
- ▶ प्रकृति के शोषण के फलस्वरूप प्रदूषण, ऋतु असंतुलन, धरती को बुखार होना
- ▶ समाजिकता का लाभ मानसिकता से ग्रसित हो जाना।
- ▶ शिक्षा विधा लाभोन्माद, भोगोन्माद व कामोन्माद को समर्पित होना।
- ▶ मानव का अध्ययन ना हो पाना।

मानव परंपरा में त्रुटियाँ - आदर्शवादी विधि से

- ▶ अव्यक्त अनिर्वचनीय सत्य का प्रतिपादन
- ▶ परंपरा में ज्ञान रहस्यमयी विधा में चले जाना, फलस्वरूप ज्ञान, परंपरा (शिक्षा, आचरण, व्यवस्था, संविधान) में प्रमाणित ना हो पाना।
- ▶ विभिन्न धर्म, संप्रदाय, पंथ आदि में परस्पर भेद-भाव होना, फलस्वरूप समाज खण्डित होना, समुदाययिकता का प्रचलन बनना।
- ▶ समाजिकता का रूढ़ीवादिता ग्रसित हो जाना।
- ▶ शिक्षा का अधिकार वर्ग विशेष में सीमित रहना।
- ▶ मानव का अध्ययन ना हो पाना।

भौतिकवादी प्रबंध

- ▶ द्वंदात्मक भौतिकवाद
- ▶ संघर्षात्मक जनवाद
- ▶ भोगोन्मादी समाजशास्त्र
- ▶ लाभोन्मादी अर्थशास्त्र
- ▶ कामोन्मादी मनोविज्ञान

आदर्शवादी प्रबंध

- ▶ रहस्यात्मक अधिभौतिकवाद
- ▶ रहस्यात्मक अधिदैवीवाद
- ▶ रहस्यात्मक अध्यात्मवाद

आह्वान

- ▶ मानव-प्रकृति संबंध में आदिकाल से अभी तक मानव जाति द्वारा किये समस्त क्रिया कलाप के परिणाम स्वरूप धरती संकट ग्रस्त (धरती को बुखार, ऋतु असंतुलन, प्रदूषण) हो गयी है। धरती का संकट ग्रस्त होना अपराध है, जिसमें हम सब मानव भागीदार हैं।
- ▶ मानव जाति का अभी तक मानव-मानव संबंधों में तालमेल (न्याय) पूर्वक जीना संभव नहीं हो पाया है। जिसके प्रमाण स्वरूप मानव जाति द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध से ग्रस्त है, जो कि अपराध है, जिसमें हम सब मानव भागीदार हैं।
- ▶ क्या आप उपरोक्त अपराधों से मुक्त होकर जीना चाहते हैं?
- ▶ यदि हाँ तो आइए, मिलकर जीवन विद्या को समझ कर, मानव परंपरा के अपराध मुक्त होने में भागीदार होते हैं।

जीवन ज्ञान

मानव का अध्ययन

- ▶ मानव ज्ञानावस्था की इकाई है।
- ▶ 'मानव' जीवन और शरीर का संयुक्त स्वरूप है।
- ▶ जीवन चैतन्य इकाई है, शरीर जड़ इकाई है।
- ▶ मानव में जीवन प्रधान है एवं शरीर उसका साधन है। जीवन शरीर के माध्यम से व्यक्त होता है और शरीर के माध्यम से ही सीखता समझता है।
- ▶ मानव निर्णय पूर्वक जीता है। सभी निर्णय जीवन में ही होते हैं। जीवन में ही शरीर संबंधी निर्णय भी होते हैं।
- ▶ मानव में तृप्ति मानवीयता पूर्ण आचरण पूर्वक ही है। जिसके लिए निर्णय पूर्वक समझदार होने की आवश्यकता है।

मानव: जीवन और शरीर

	जीवन	शरीर
प्रकार	चैतन्य इकाई	जड़ इकाई
अवधि	अमर	जन्म-मृत्यु
आवश्यकता	सुख	सुविधा

सुख - सुविधा

	सुख	सुविधा
कब	हमेशा	आवश्यकता होने पर
कितना	असीमित	सीमित
स्रोत	ज्ञान, प्रमाण	भौतिक-रासायनिक वस्तु
आवश्यकता पूर्ती के साधन	मानवीयता पूर्ण आचरण	मानवीय व्यवसाय

संबंध

- ▶ संबंध= पूर्णता के अर्थ में अनुबंध
- ▶ अनुबंध= दोनों की स्वीकृति
- ▶ पूर्णता= पूरा होना (समझ पूरा होना एवं प्रमाण पूरा होना)
 - ▶ पूर्ण मानव= मानव-मानव संबंध एवं मानव-प्रकृति संबंध में तालमेल
 - ▶ समझना —> जीना => तालमेल

मानवीय आवश्यकताएँ

- ▶ सुख चैतन्य जीवन की आवश्यकता है, भौतिक सुविधाएँ जड शरीर को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। इन दोनों आवश्यकताओं का पूरा होना जरूरी है।
- ▶ मानव में सुख से भौतिक आवश्यकताएँ (सुविधा) पूरी नहीं होती।
- ▶ (भौतिक) सुविधाओं द्वारा चैतन्य पक्ष की (अभौतिक) आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकती। सुविधाओं से निरंतर सुख संभव नहीं है।

मानव में जीने के चार आयाम

- ▶ कार्य (व्यवसाय) आयाम
- ▶ व्यवहार आयाम
- ▶ विचार आयाम
- ▶ अनुभव आयाम



मानव में चार आयाम - अंतरसंबंध

- ▶ मानव में व्यवहार आयाम एवं कार्य आयाम शरीर के माध्यम से व्यक्त होते हैं।
- ▶ मानव में अनुभव आयाम और विचार आयाम जीवन में होते हैं।
- ▶ विचार आयाम के आधार पर ही व्यवहार आयाम व व्यवसाय आयाम व्यक्त होते हैं।
- ▶ जागृत अनुभव आयाम की रौशनी में ही विचार आयाम समाधानित होता है।
- ▶ अनुभव आयाम में जागृति अध्ययन पूर्वक ही संभव है।

मानव की दो ताकत

- ▶ कल्पनाशीलता (विचार आयाम का क्रियाकलाप)
- ▶ कर्मस्वतंत्रता (स्वयंस्फूर्त निर्णय पूर्वक व्यवहार-कार्य)

अनुभव आयाम

सहअस्तित्व सहज नियम, नियंत्रण, संतुलन का अध्ययन पूर्वक ही अनुभव आयाम जागृत होता है, ज्ञान संपन्न होता है। अनुभव आयाम जागृत होने के लिए विचार आयाम व शरीर अध्ययन करने के लिए साधन हैं।

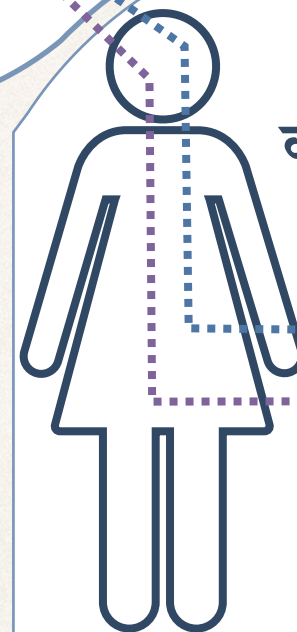
जागृत अनुभव आयाम की रौशनी में समाधानित विचार आयाम:

काल्पनिक संसार = वास्तविक संसार

जहाँ कल्पनाशीलता अस्तित्व सहज नियम, नियंत्रण, संतुलन के आधार पर कार्यरत रहती है।

कल्पनाशीलता
मनाकार
निर्णयः

मूल्यांकन: वांछनीय परिणाम = समाधान = सुख



कर्मस्वतंत्रता

साकार
करना

कर्म (व्यवहार/कार्य)

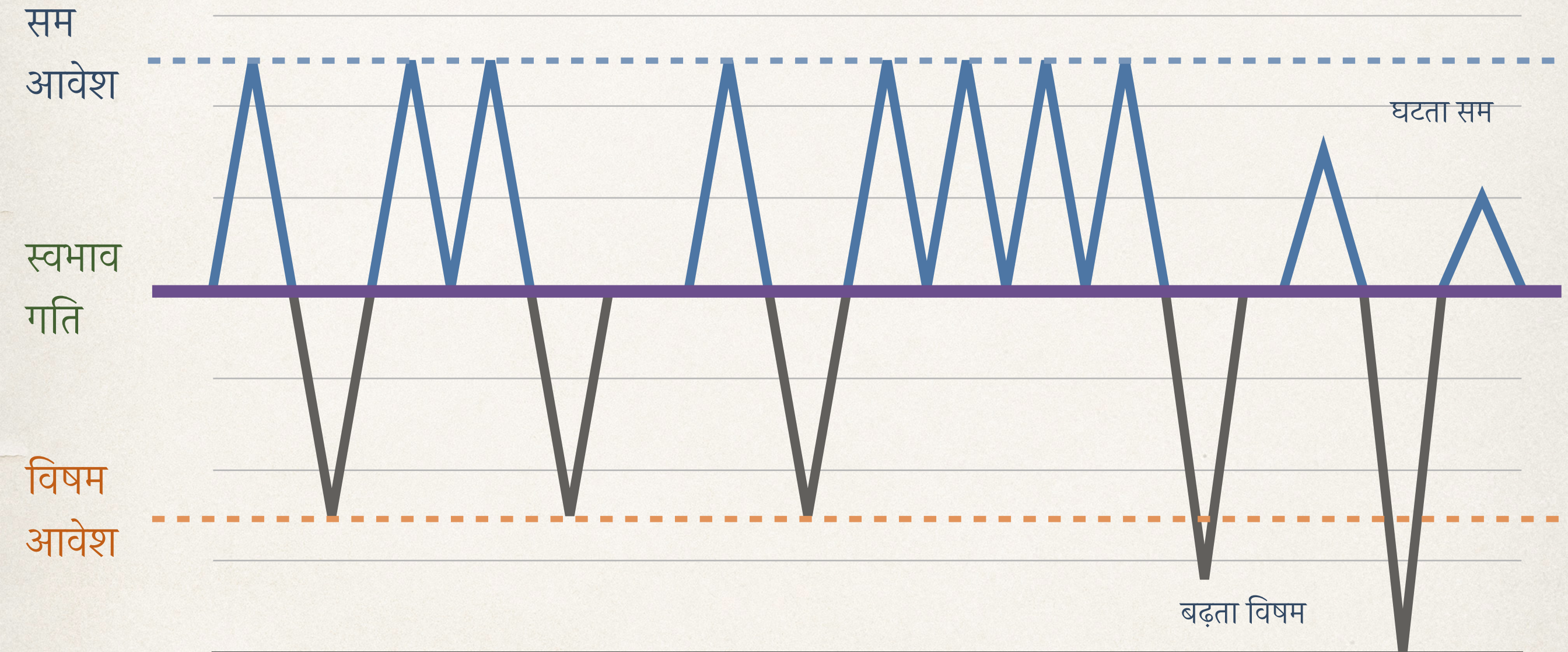
सहअस्तित्व का
अध्ययन

परिणाम

वास्तविक संसार - जहाँ सहअस्तित्व सहज नियम, नियंत्रण, संतुलन है।

- ❖ नियम (law) : निश्चित आचरण definite conduct
- ❖ नियंत्रण (regulation) : नियम/आचरण की निरंतरता sustained conduct/law
- ❖ संतुलन (balance) : व्यवस्था की निरंतरता permanence of order

क्या सुख आवेश है?



सम और विषम दोनों ही आवेश हैं

जीवन का स्वरूप

अक्षय बल	प्रत्यावर्तन क्रिया समझने के अर्थ में	परावर्तन क्रिया समझाने के अर्थ में	अक्षय शक्ति
आत्मा	अनुभव	प्रमाण	प्रमाणिकता
बुद्धि	बोध	संकल्प	ऋतंभरा
चित्त	चिंतन	चित्रण	इच्छा
वृत्ति	तुलन न्याय-धर्म-सत्य प्रिय-हित-लाभ	विश्लेषण	विचार
मन	आस्वादन	चयन	आशा
शरीर (मानव परंपरा में प्रमाणित होने के लिये)			

4½ क्रिया - शरीर चलाने के लिये

5½ क्रिया ज्ञान के अर्थ में

तुलन

दृष्टियाँ

▶ प्रिय

▶ हित

▶ लाभ

▶ न्याय

▶ धर्म

▶ सत्य

मानव शरीर यात्रा

- ▶ जीवन अमर, शरीर नश्वर, जीवन में अनेक शरीर यात्रा, जन्म-मृत्यु घटना।
- ▶ शरीर यात्रा में विभिन्न आयु-अवस्था (शिशु, बाल्य, किशोर, युवा, प्रौढ़, वृद्ध)।
- ▶ हर आयु-अवस्था में उपयुक्त आचरण।

सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान

Knowledge of Coexistence

अस्तित्व, सहअस्तित्व में, से, के लिए व्यवस्था है

अस्तित्व

- ▶ अस्तित्व दो अविभाज्य वस्तु है
1. शून्य (असीम व्यापक सत्ता) वस्तु है
2. प्रकृति (अनंत इकाईयाँ) वस्तु है, अविनाशी है।
- ▶ अस्तित्व आदि-अंत से मुक्त है,
- ▶ शून्य वस्तु नित्य है,
- ▶ प्रकृति वस्तु शाश्वत है, अविनाशी है।

सहअस्तित्व

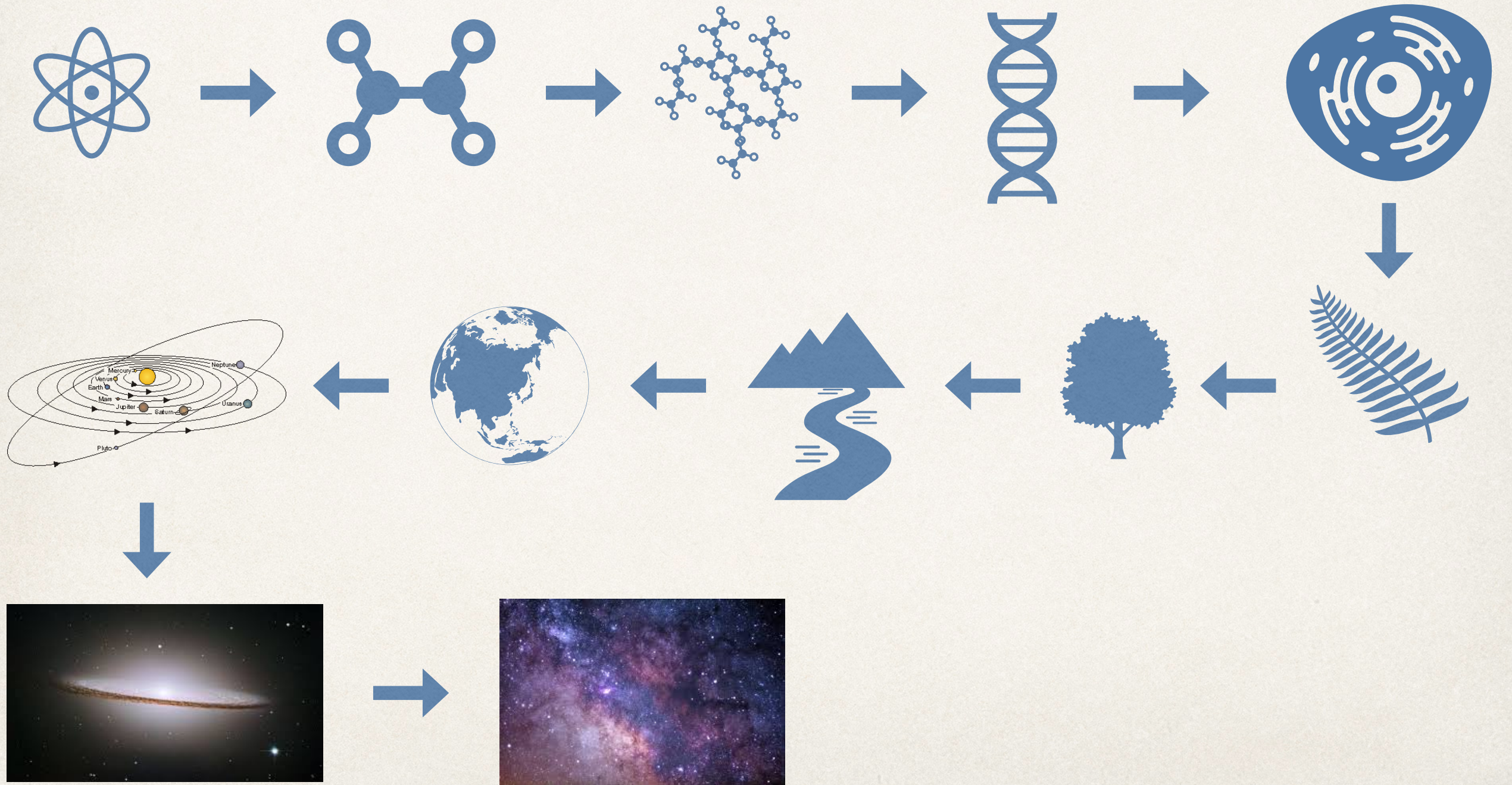
- ▶ उपयोगिता पूरकता विधि से साथ-साथ होना व रहना
- ▶ प्रत्येक एक स्वयं में त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदार
- ▶ सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति, संपूर्ण वस्तु है
- ▶ ऊर्जामय, क्रियाशील, नियंत्रित
- ▶ परिणाम - अमरत्व, श्रम - विश्राम, गति - गंतव्य
- ▶ विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति
- ▶ सहअस्तित्व नित्य प्रभावी

व्यवस्था

- ▶ पहचानना, निर्वाह करना
- ▶ नियम, नियंत्रण संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक होना व रहना
- ▶ निश्चित (प्रयोजन, गठन, आचरण, भागीदारी) में, से, के लिए व्यवस्था है
- ▶ चार अवस्था, चार पद

अस्तित्व सहअस्तित्व है

- ❖ प्रत्येक इकाई अपनी मौलिकता सहित स्वयं में व्यवस्था है और समग्र व्यवस्था में भागीदार है।



अस्तित्व सहअस्तित्व रूपि व्यवस्था है

- ❖ व्यवस्था = निश्चित प्रयोजन, निश्चित अंग, निश्चित प्रक्रियाएँ, निश्चित भागीदारी सहित
- ❖ **स्थूल** (ग्रह) के स्तर पर प्रकृति में 4 अवस्थाएँ हैं।
 - ❖ प्रकृति में मात्र तीन प्रकार की क्रियाएँ हैं: भौतिक, रासायनिक व चैतन्य क्रिया
 - ❖ तीनों क्रियाओं का आधार परमाणविक व्यवस्था है
- ❖ **सूक्ष्म** स्तर पर परमाणु व्यवस्थित है।
 - ❖ स्थिर परमाणु गठन (structures) और निश्चित गुण- जड़ परमाणु
 - ❖ गठनपूर्ण परमाणु - जीवन $[G_1]$ - चैतन्य परमाणु
- ❖ **कारण** स्तर पर 'मध्यस्थ क्रिया' कार्यरत है।
- ❖ **महाकारण** स्तर पर व्यापक और प्रकृति का सहअस्तित्व है।
 - ❖ जड़ व चैतन्य प्रकृति व्यापक सत्ता में घिरी, भीगी, डूबी है।

चार अवस्था की पहचान

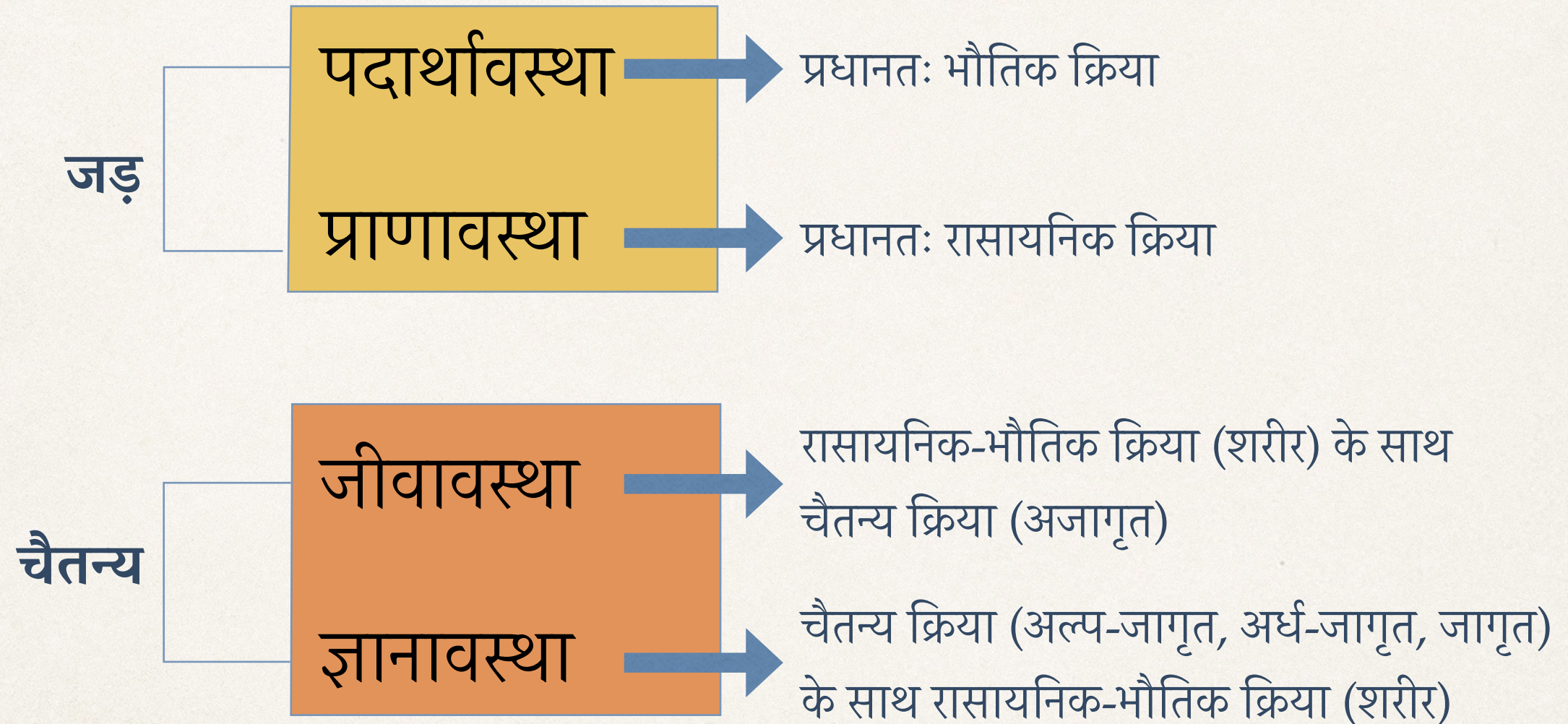
- ▶ **पदार्थावस्था:** पदार्थ से बनी इकाइयाँ। खनिज संसार
- ▶ **प्राणावस्था:** इकाइयाँ जिनमें श्वसन (प्राण संचार) होता रहता है। वनस्पति संसार
- ▶ **जीवावस्था:** इकाइयाँ जिनमें विचरण क्षमता है। जिनके शरीर में मांस व स्नायु तंत्र कार्यरत हैं। जीव-जन्तु, पशु-पक्षी संसार।
- ▶ **ज्ञानावस्था:** इकाइयाँ जिनमें सुख के लिए अर्थ को पहचानने की चेष्टा है। स्वयं, संसार, संबंधों, समाज, व्यवस्था, प्रकृति आदि के अर्थ। मानव।



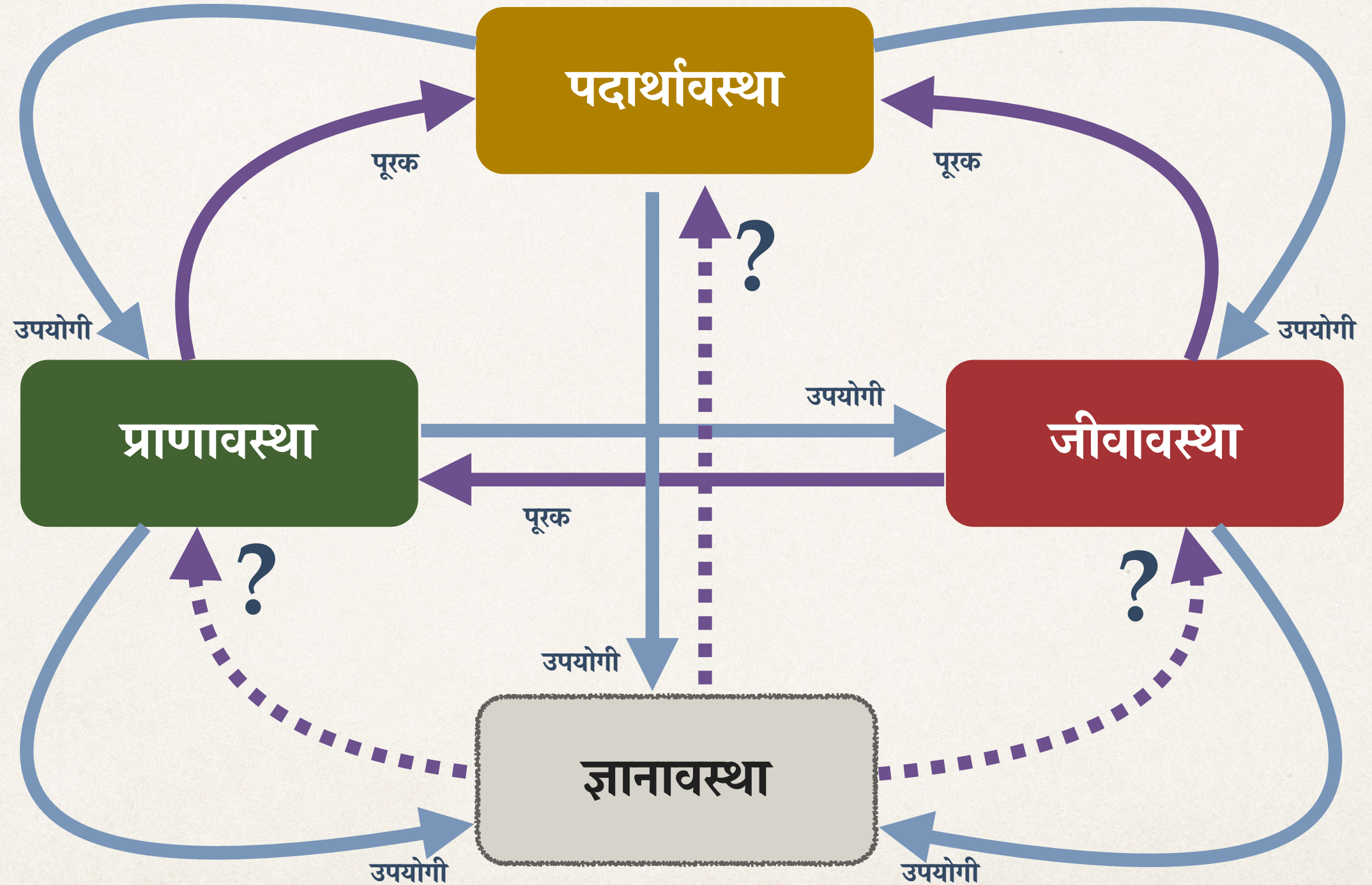
अस्तित्व में चार अवस्था

	रूप	गुण	स्वभाव	धर्म	अनुषंगियता
पदार्थावस्था	आकार, आयतन, घन	सम, विषम, मध्यस्थ	संगठन-विगठन	अस्तित्व	परिणाम अनुषंगी
प्राणावस्था	बीज अनुरूप	सम, विषम, मध्यस्थ	सारक-मारक	+ पुष्टि	बीज अनुषंगी
जीवावस्था	वंश रूप	सम, विषम, मध्यस्थ	क्रूर-अक्रूर	+ जीने की आशा	वंश अनुषंगी
ज्ञानावस्था	मानव रूप	सम, विषम, मध्यस्थ	धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा	+ सुख	संस्कार अनुषंगी

प्रकृति में दो वर्ग = जड़ व चैतन्य



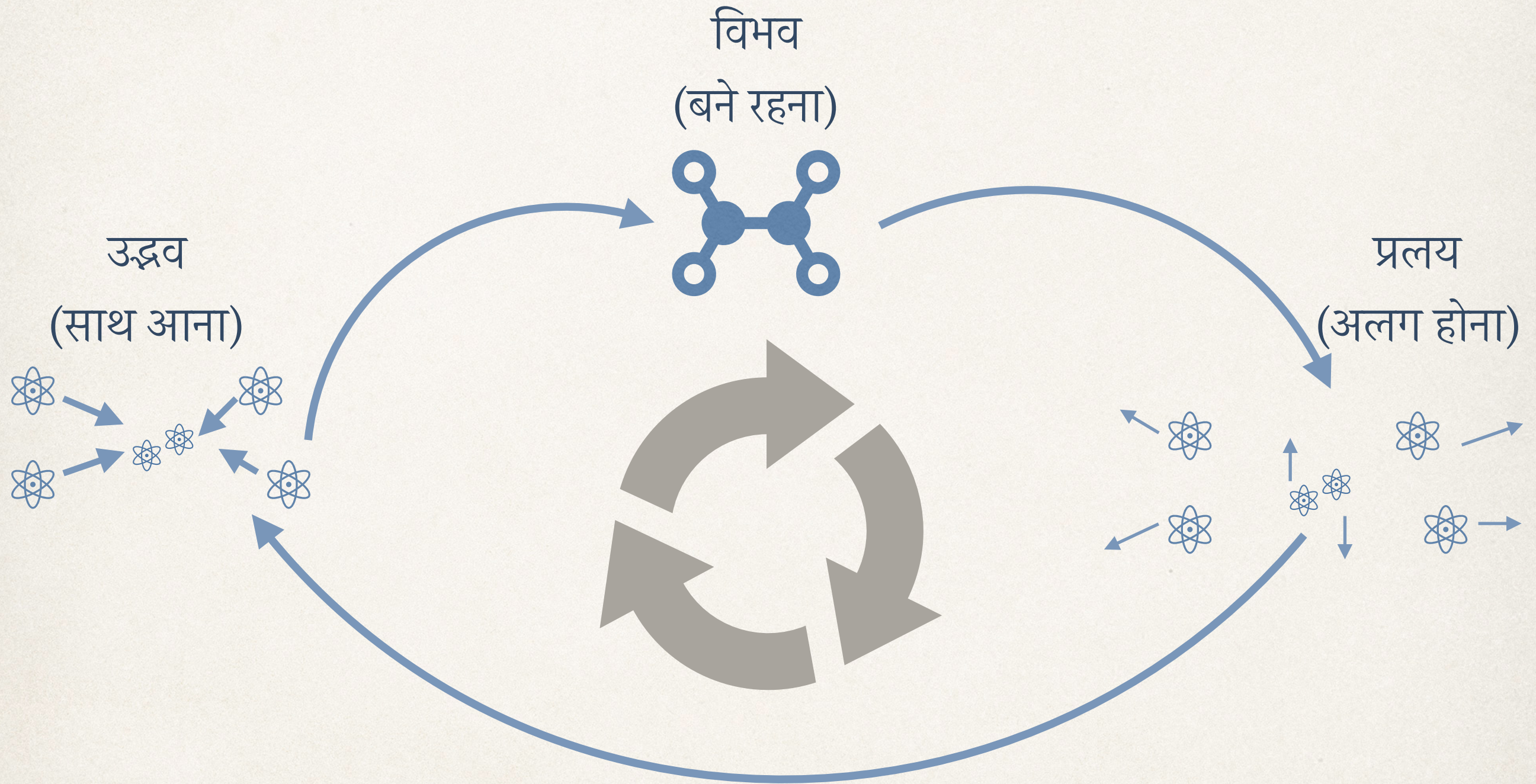
चार अवस्था में सहअस्तित्व (उपयोगिता पूरकता)



चार अवस्थाओं में उपयोगिता - पूरकता

- ▶ चारों अवस्थाएँ विकास क्रम में हैं।
- ▶ कम विकसित अधिक विकसित के लिए उपयोगी हैं
- ▶ अधिक विकसित कम विकसित के लिए पूरक हैं
- ▶ अधिक विकसित कम विकसित के संतुलन में पोषित-संरक्षित हैं

पदार्थावस्था



पदार्थावस्था में उद्भव, विभव एवं प्रलय क्रियाओं का कारण वातावरण है।

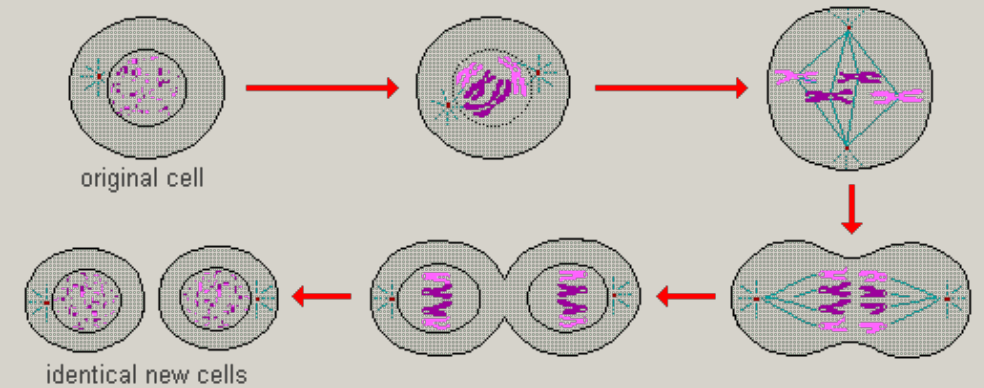
प्राण अवस्था

अनुकूल वातावरण

पुष्टि



प्रजनन



प्रत्येक प्राण रचना ग्रहण, निष्कासन के संतुलन में स्वयं को स्वस्थ बनाए रखती है, यही पुष्टि है।

प्राणावस्था

- ▶ प्राणावस्था अनुकूल वातावरण में पनपती है।
- ▶ प्राण रचना में अपनी आवश्यकता अनुसार (वायु, जल व खनिज) पदार्थों को ग्रहण करने व ग्रहण किए पदार्थों को रचना की पुष्टि में प्रयोग करने की क्रिया, व अनआवशकीय पदार्थों को निष्कासित करने की क्षमता रहती है।
- ▶ प्राण रचनाएँ वातावरण से पदार्थ ग्रहण कर उसे अपने प्रतिरूप के रूप में निर्मित करने की क्षमता के साथ रहती हैं, इस प्रक्रिया को ही प्रजनन क्रिया कहा जाता है।

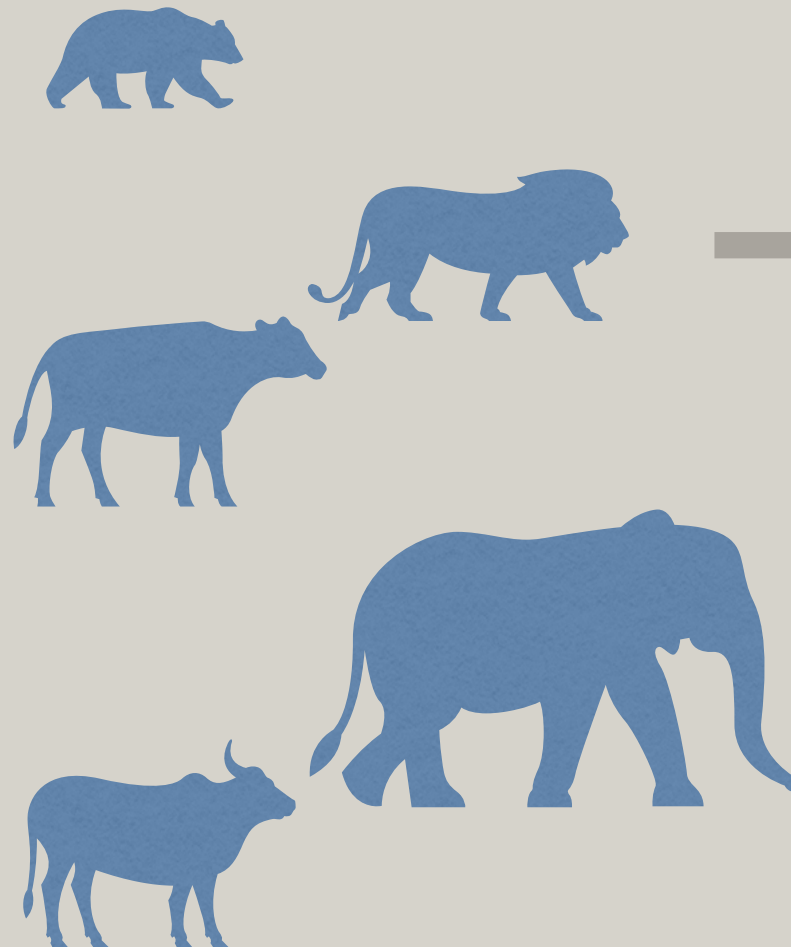
जीवावस्था

जीव अपने लिए अनुकूल वातावरण चयन करने की क्षमता संपन्न रहते हैं।

- ▶ जीव विचरण (motion) की क्षमता के साथ हैं।
- ▶ जीवों में, विचरण के लिए शरीर के अंग-प्रतयंगों में जुड़ाव व तालमेल के अर्थ में मांस व स्नायु तंत्र होता है।
- ▶ जिन भी प्राणियों में मांस अथवा मेधस तंत्र होता है वे सब जीवावस्था की इकाई हैं।



प्रतिकूल वातावरण



अनुकूल वातावरण



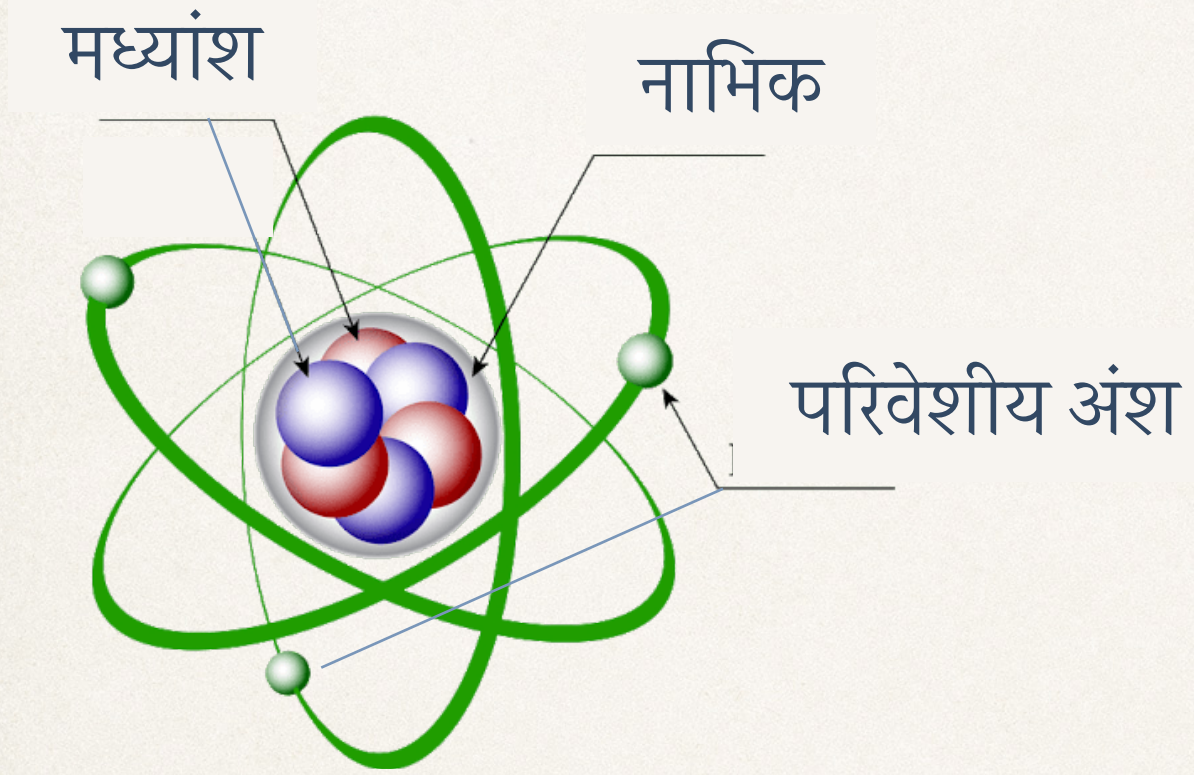
ज्ञानावस्था



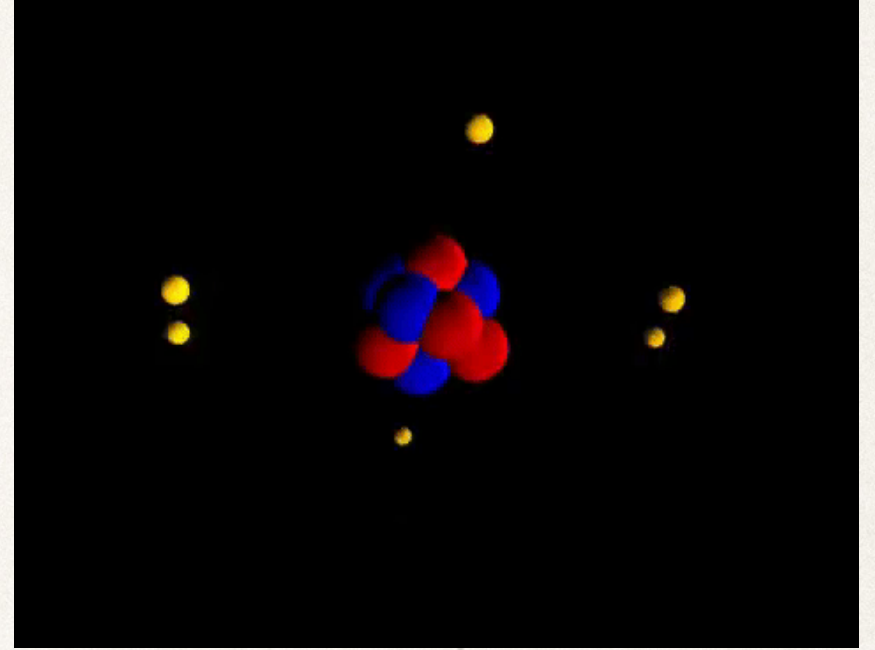
- ▶ ज्ञानावस्था अपने वातावरण को विकसित करने की क्षमता से संपन्न है।
- ▶ मानव, चैतन्य (जीवन) और भौतिक-रासायनिक इकाई (शरीर) का संयुक्त रूप है।
- ▶ शरीर के लिए वातावरण प्राकृतिक (भौतिक) वातावरण है। शरीर का पोषण-संरक्षण प्राकृतिक वातावरण में संतुलन से है।
- ▶ चैतन्य इकाई जीवन का वातावरण सामाजिक वातावरण है। जीवन का पोषण-संरक्षण सामाजिक वातावरण के संतुलन से है।
- ▶ मानव की क्षमता सामाजिक वातावरण को विकसित करने के लिए है, न कि प्राकृतिक वातावरण से छेड़-छाड़ के लिए।
- ▶ सामाजिक वातावरण के विकास के लिए शिक्षा - संस्कार ही उपाय है।

परमाणु में व्यवस्था

परमाणु संरचना



चित्र 1



चित्र 2

परमाणु गठन - 1

- ▶ प्रकृति में चारों अवस्थाओं के मूल में परमाणु हैं। प्रकृति में परमाणु व्यवस्था की मूल इकाई है।
- ▶ परमाणु में निहित सभी अंश व्यवस्था प्रवृत्ति के साथ हैं, सभी अंश स्वयं-स्फूर्त विधि से (दबाव-प्रभाव से मुक्त) अपनी भागीदारी को पहचान कर निर्वाह करते हैं।
- ▶ हर परमाणु निश्चित संख्या में परमाणु अंशों से गठित है। मौलिक रूप में परमाणु अंश एक ही प्रजाति के हैं।
- ▶ परमाणु संरचना में अंश जिस स्थान (नाभिक या विभिन्न परिवेश) में होता है वहाँ का कार्य करता है, नाभिक में स्थित होने पर मध्यांश का कार्य व परिवेश में स्थित होने पर परिवेशीय अंशों का कार्य को संपन्न करता है।

परमाणु गठन - 2

- ▶ हर परमाणु में कुछ अंश परमाणु के केन्द्र में स्थित हैं जिन्हें मध्यांश या नाभिकीय अंश संज्ञा है।
- ▶ परमाणु में कुछ अंश मध्यांशों से निश्चित दूरी (न्यूनतम - अधिकतम सीमा) अर्थात् परिवेश में रहते हुए मध्यांशों की परिक्रमा करते हैं। मध्यांशों की परिक्रमा करने वाले अंशों को परिवेशीय अंश संज्ञा है।
- ▶ मध्यांश निरंतर घूर्णन गति में हैं। किसी इकाई का अपनी धूरी पर घूमना घूर्णन गति कहलाता है।
- ▶ परिवेशीय अंश स्वयं में घूर्णन गति करते हुए वर्तुलात्मक गति करते हैं। किसी इकाई का किसी दूसरी इकाई की परिक्रमा करना वर्तुलात्मक गति कहलाता है।

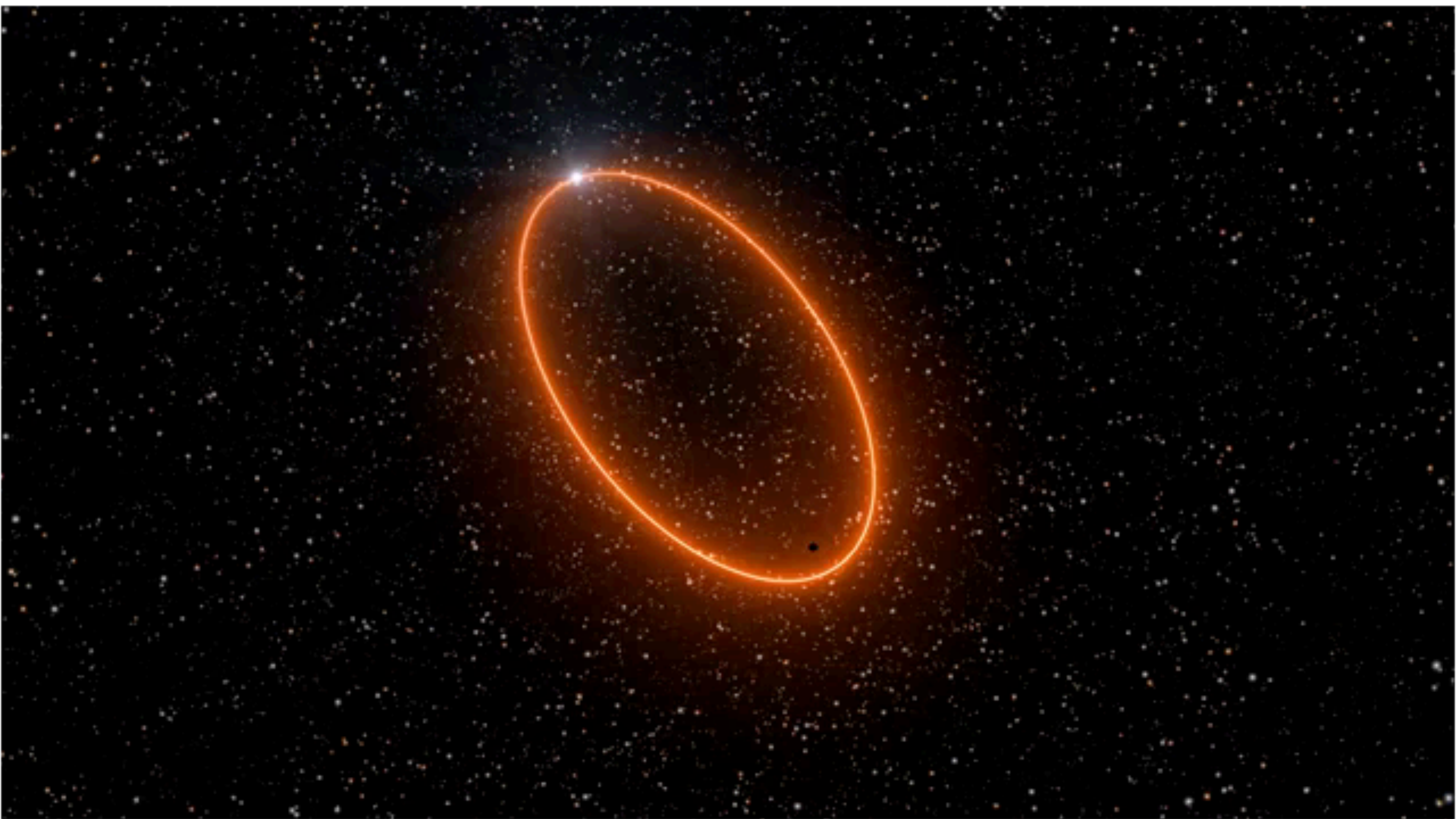
परमाणु संरचना - 3

- ▶ मध्यांश व परिवेशीय अंशों की परस्पर गतियों के तालमेल से संपूर्ण परमाणु कम्पनात्मक गति पूर्वक संतुलित रहता है।
- ▶ कम्पनात्मक गति पूरे परमाणु के संयुक्त आचरण के रूप में होने वाली गति है।
- ▶ हर परमाणु स्वयं में निरंतर घूर्णन गति में रहता है साथ में प्रत्येक परमाणु स्वयं में निरंतर कम्पनात्मक गति में भी रहता है।
- ▶ इस प्रकार पूरा परमाणु उसमें भागीदार अंशों के संयुक्त आचरण में, से, के लिए एक संतुलित-स्थिर व्यवस्थित इकाई के रूप में बने रहता है, इस विन्यास का नाम परमाणु गठन है।

घुर्णन व कम्पनात्मक गति का स्वरूप



कम्पनात्मक गति - कैसे



घुर्णन, वर्तुल व कम्पनात्मक गति - कैसे



परमाणु में मध्यस्थ क्रिया

- ▶ परमाणु पर जब कभी परस्परता के दबाव वश परिवेशीय अंशों के अपने निश्चित कार्य-गति पथ से विचलित होने की चेष्टा होती है, ऐसे में मध्यांश परिवेशीय अंशों को गठन में बनाए रखने के लिये मध्यस्थ बल के प्रयोग द्वारा नियंत्रित कर लेता है। हर परमाणु में होने वाली इस क्रिया का नाम मध्यस्थ क्रिया है।
- ▶ मध्यस्थ क्रिया के आधार पर ही परमाणु गठन का संरक्षण है। फलस्वरूप आगे की व्यवस्था के लिये उपयोगी बना रहता है।

परमाणु की मौलिकता

- ▶ प्रत्येक परमाणु में निश्चित संख्या में निहित अंशों के संयुक्त आचरण पूर्वक निश्चित गुणों का प्रकाशन है।
- ▶ जड़ परमाणु में से निष्पन्न होने वाली कार्य ऊर्जा (ताप, ध्वनि, विद्युत) रूपी प्रभाव ही परस्परता में गुण है। हर जड़ परमाणु प्रजाति में निश्चित अनुपात में ताप, ध्वनि, विद्युत की निष्पत्ति (परावर्तन) है।
- ▶ ताप, ध्वनि, विद्युत रूप में कार्य ऊर्जा जड़ परमाणु में प्रत्येक परिवेशीय अंशों में उत्पन्न होती है। हर जड़ परमाणु प्रजाति में निहित अंशों की संख्या निश्चित होने के कारण वश एक प्रजाति के सभी परमाणु एक ही अनुपात में कार्य ऊर्जा को निष्पन्न होती है।

जड़ परमाणु में बंधन

- ▶ जड़ परमाणु भार बंधन व अणु बंधन युक्त हैं।
- ▶ जड़ परमाणु में भार मूलतः एक परमाणु के मध्यांशों व परस्पर अन्य परमाणुओं के मध्यांशों के बीच होने वाला आकर्षण है, यही भार बंधन है। परिवेशीय अंश इसमें भागीदार नहीं हैं।
- ▶ जड़ परमाणुओं में परस्पर अन्य जड़ परमाणुओं के साथ अणु रचना बनाने की प्रवृत्ति है। यही अणु बंधन है। अणु रचना में परिवेशीय अंशों की सक्रियता प्रमुख है।
- ▶ बंधन का तात्पर्य परमाणु के संदर्भ में संगठित होने से है। सहवास व अणु रचना परमाणु के स्तर पर संगठित होने के दो स्वरूप हैं।

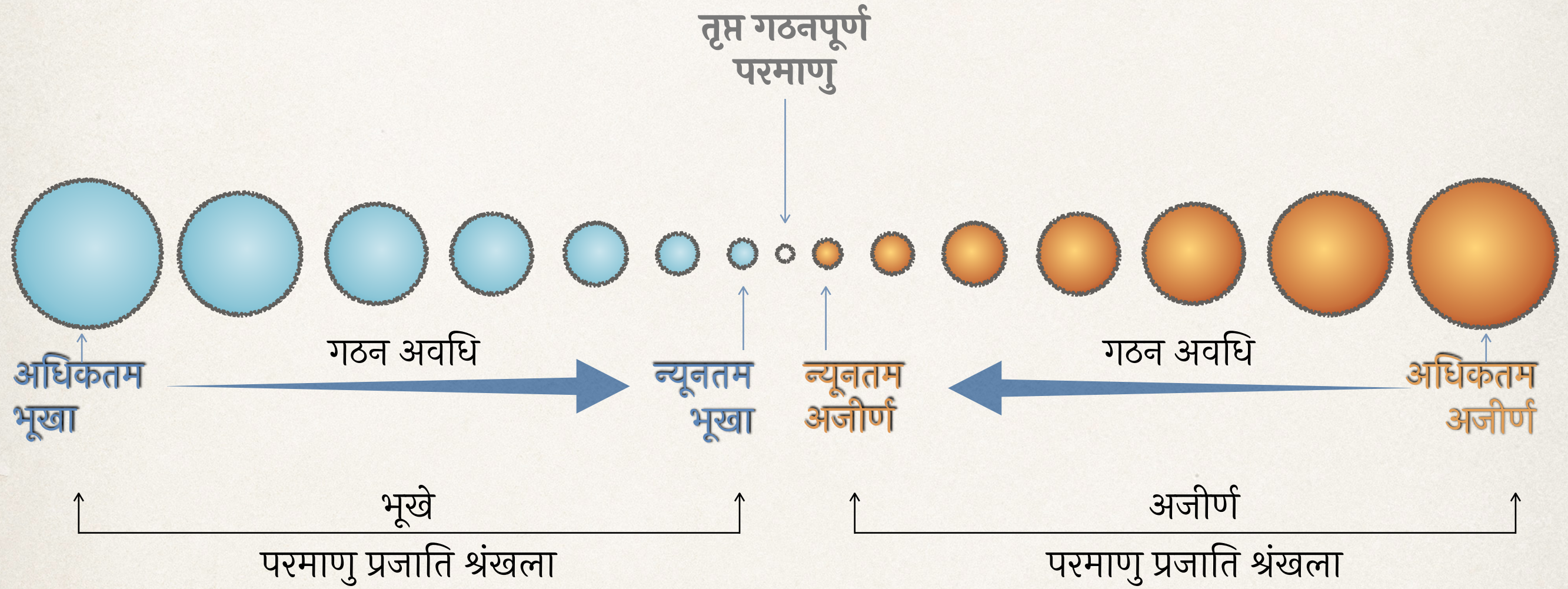
परमाणु प्रजाति

- ▶ परमाणुओं में जो प्रजाति भेद है, वह गठन भेद के आधार पर है। गठन भेद का अर्थ है कि निहित अंशों की संख्या में भेद। फलस्वरूप परमाणु प्रजाति के गुणों में भेद।
- ▶ सभी 121 प्रजाति अपने में भिन्न निश्चित गठन हैं, गठन भेद के मूल में संख्या भेद ही है। गठनपूर्ण चैतन्य परमाणु (जीवन) एक ही प्रजाति है व गठनशील जड़ परमाणु 120 प्रजाति हैं।
- ▶ गठनशील परमाणु (जड़) ही परिमार्जित (विकास) होकर गठनपूर्ण (चैतन्य) होते हैं।

गठनशीलता

- ▶ गठनशील जड़ परमाणुओं में दो प्रकार हैं - (1) भूखे जड़ परमाणु, (2) अजीर्ण जड़ परमाणु
- ▶ भूखे - जिन जड़ परमाणु प्रजातियों में गठन परिवर्तन, परमाणु में बाह्य अंशों के समाने की विधि से होता है, इस विधि को प्रस्थापन क्रिया कहते हैं।
- ▶ अजीर्ण - जिन जड़ परमाणु प्रजातियों में गठन परिवर्तन परमाणु में से कुछ अंशों के बहिर्गत हो जाने की विधि से होता है, इस विधि को विस्थापन क्रिया कहते हैं।
- ▶ भूखे प्रजातियों में न्यूनतम भूखे, कम भूखे, अधिक भूखे, अधिकतम भूखे के रूप में पहचाना जा सकता है। ऐसे ही न्यूनतम अजीर्ण, कम अजीर्ण, अधिक अजीर्ण, अधिकतम अजीर्ण के रूप में पहचाना जा सकता है।

गठनशीलता



गठनपूर्णता

- ▶ गठनपूर्ण परमाणु - जिस गठन की निरंतरता है अर्थात्, जिस गठन में परिवर्तन नहीं होता अर्थात् वह गठन जो प्रस्थापन व विस्थापन दोनों से मुक्त है। इसलिये गठनपूर्ण परमाणु को तृप्त परमाणु भी कहते हैं।
- ▶ गठनपूर्ण परमाणु भार बंधन व अणु बंधन दोनों से मुक्त है व आशा बंधन से युक्त है।
- ▶ गठनपूर्ण परमाणु (जीवन) आशा के आधार पर संगठित होते हैं।
जीवावस्था में जीने की आशा के आधार पर संगठित होते हैं व ज्ञानावस्था में सुख की आशा के आधार पर संगठित होते हैं।

मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान

मानव की मौलिकता

- ▶ हर मानव संतान जन्म से:
- ▶ न्याय का याचक है, परंतु न्याय प्रदायी क्षमता नहीं है
- ▶ सही कार्य-व्यवहार करने का इच्छुक है, परंतु सही-गलत का भेद नहीं जानता
- ▶ सत्य वक्ता है, परंतु सत्य बोध नहीं है

मानवीयता पूर्ण आचरण *

- ▶ मानवीयता पूर्ण आचरण = मानव में समझदारी व ज़िम्मेदारी पूर्वक जीने का आचरण
- ▶ समझदारी से ईमानदारी, ईमानदारी से ज़िम्मेदारी, ज़िम्मेदारी से भागीदारी
- ▶ मानव की ज़िम्मेदारी परिवार में, समाज में और प्रकृति में पहचान में आती है।
- ▶ ज़िम्मेदारी पूर्वक जीने से परिवार में, समाज में व प्रकृति में सहअस्तित्व (तालमेल) पूर्वक जीना संभव होता है।
- ▶ सहअस्तित्व पूर्वक जीना = समाधान = सुख

* आचरण = इकाई द्वारा बारंबार दोहराए जाने वाली निश्चित क्रिया, जिससे परस्परता में इकाई की उपयोगिता व पूरकता निर्धारित होती है। आचरण ही परस्परता में पहचान का आधार है।

मानवीयता पूर्ण आचरण

मानवीयता स्वयं में जिम्मेदारी पूरी कर परस्परता में सहयोग प्रदान करने में, से, के लिए है। अनुभव ज्ञान में संपन्न होने से ही मानवीयता पूर्वक जीने में निष्ठा स्थापित होती है।

आचरण क्षेत्र	मानवीय आचरण का आधार	मानवीयता के आभाव में
संबंध	मूल्य	गलती
समाजिकता	चरित्र	अपराध
व्यवस्था	नीति	शोषण-संघर्ष-युद्ध

मूल्य = न्याय

- ▶ संबंधों में न्याय ही मौलिक मूल्य है।
- ▶ संबंध में स्वयं के पक्ष की ज़िम्मेदारीओं को पूरा करने में, से, के लिए न्याय है।
- ▶ न्याय = संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन एवं उभय तृप्ति

संबंधों की पहचान

- ▶ प्रकृति में सात प्रकार से मानव-मानव संबंध हैं।
- ▶ प्रत्येक संबंध में निहित:
 - ▶ निश्चित प्रयोजन
 - ▶ निश्चित क्रिया
 - ▶ निश्चित जिम्मेदारी
 - ▶ निश्चित अपेक्षा
- ▶ सभी संबंधों में निहित निश्चित प्रयोजन, क्रिया, जिम्मेदारी व अपेक्षा को समझने से मानव संबंध की पहचान करने की योग्यता अर्जित करता है।

सात संबंध

1 पति- पत्नी	यतीत्व-सतीत्व (यत्न/सत्त्व पूर्वक प्रमाणित होना)
2 अभिभावक-संतान	पोषण-संरक्षण/अभ्युदय, उपयोगिता, पूरकता
3 भाई-बहन	परस्पर अभ्युदय संयोग (सहयोग)
4 मित्र-मित्र	परस्पर पूरक
5 गुरु-शिष्य	प्रमाणिक-जिज्ञासु
6 साथी-सहयोगी	दायित्व-कर्तव्य
7 व्यवस्थागत संबंध	भागीदारी

मूल्यों का निर्वाह

- ▶ प्रत्येक संबंध के निर्वाह में निश्चित मूल्यों के आधार पर आदान-प्रदान है।
- ▶ मानव में समझदारी (अनुभव ज्ञान) पूरा होने पर ही मूल्य प्रदायी क्षमता का विकास होता है।
- ▶ मूल्य जिम्मेदारी के भाव हैं जिन्हें निर्वाह करने से संबंधों में तालमेल स्थापित होता है।

मूल्य

जीवन मूल्य 4	मानव मूल्य 6	व्यवहार मूल्य 18				उत्पादन मूल्य 2
		स्थापित मूल्य 9	शिष्ट मूल्य 9	स्थापित मूल्य	शिष्ट मूल्य	
सुख	धीरता	कृतज्ञता	सौम्यता	वात्सल्य	सहजता	उपयोगिता
शांति	वीरता	गौरव	सरलता	सम्मान	सौहार्द्रता	सौंदर्य
संतोष	उदारता	श्रद्धा	पूज्यनीयता	स्नेह	निष्ठा	
आनंद	दया	प्रेम	अनन्यता			
	कृपा	विश्वास	सौजन्यता			
	करुणा	ममता	उदारता			

विश्वास

- ▶ जीवन ज्ञान
- ▶ सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान
- ▶ मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान
- ▶ स्वयं में विश्वास
- ▶ सहअस्तित्व में विश्वास
- ▶ सुख पूर्वक जीने में विश्वास

- ❖ धीरता: न्याय पूर्वक (सार्वभौम लक्ष्य के अर्थ में) जीने में निष्ठा
- ❖ वीरता: दूसरों को न्याय पहुँचाने के लिए स्व-शक्तियों का नियोजन
- ❖ उदारता: तन, मन, धन रूपी अर्थ का सार्वभौम लक्ष्य के लिए नियोजन
- ❖ दया:
 - ❖ किसी के विकास में बाधा न बनना, सहयोगी होना।
 - ❖ जिसमें पात्रता हो लेकिन अनुरूप वस्तु न हो उसे वस्तु प्रदान कर देने की क्षमता
(providing content to one who has the receptivity but not the access to content)
- ❖ कृपा: वस्तु उपलब्ध हो लेकिन उसके अनुरूप पात्रता न हो ऐसे में पात्रता स्थापित करने की क्षमता
- ❖ करुणा: जिसके पास न पात्रता, न वस्तु हो उसे दोनों ही प्रदान कर देने की क्षमता

मूल्यांकन

- ▶ प्रत्येक संबंध के निर्वाह में दोनों पक्ष मिलकर प्रयोजन के अर्थ में मूल्यांकन करते हैं।
- ▶ मूल्यांकन पूर्वक जितना निर्वाह सही हुआ पहचान में आता है वह दोनों को उत्सवित करता है। निर्वाह में जो कमी पहचान में आती है, उसे पूरा करने का कार्यक्रम दोनों पक्षों में सुनिश्चित होता है।

चरित्र

	मानवीय चरित्र का अभाव	व्याख्या
स्वधन	परधन	प्रतिफल, पारीतोष, पुरस्कार
स्वनारी/स्वपुरुष	परनारी / परपुरुष	एक पति / पत्नी धर्म का पालन
दया पूर्ण कार्य-व्यवहार	परपीड़ा कार्य-व्यवहार	प्रदायी क्षमता का विस्तार

नीति

मन-तन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा

	सदुपयोग	सुरक्षा
मन	मानवीयता में समर्पित रहने से	सहअस्तित्व को अध्ययन व प्रमाणित करने में
तन	- मानव उपयोगी उत्पादन कार्य में - सेवा कार्य में	स्वास्थ्य-संयम पूर्वक
धन	- मानवीयता के अर्थ में समर्पित करने में - उपभोग, उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनीता	उत्पान और उपभोग के बीच जो विनिमय, भंडारन, दूरगमन आदि में देखभाल से।

मानवीय नीति के अभाव में व्यवस्थाएँ शोषण ग्रस्त होती है जिसके फलस्वरूप संघर्ष-युद्ध प्रसवित होता है।

पंच कोटी के मानव

श्रेणी	प्रकार	स्वभाव	दृष्टि	विषय	चेतना (मानसिकता)
अमानव	पशु मानव	दीनता प्रधान हीनता, क्रूरता	प्रिय-हित-लाभ	आहार, निद्रा, भय, मैथून	जीव चेतना
	राक्षस मानव	क्रूरता प्रधान दीनता, हीनता	प्रिय-हित-लाभ	आहार, निद्रा, भय, मैथून	
मानव	मानव	धीरता, वीरता, उदारता	न्याय प्रधान धर्म, सत्य	वित्तेषणा, पुत्रेषणा, लोकेषणा	मानव चेतना
अतिमानव	देव मानव	दया, कृपा	धर्म प्रधान न्याय, सत्य	लोकेषणा	देव चेतना
	दिव्य मानव	करुणा	सत्य प्रधान न्याय, धर्म	विषय मुक्त	दिव्य चेतना

मानव लक्ष्य

	वर्तमान स्थिति (नासमझीवश)	प्रस्तावित (समझदारी पूर्वक)	जीवन मूल्य
व्यक्ति	समस्या ग्रस्त	समाधान	सुख
परिवार	क्लेश ग्रस्त	समृद्धि	शांति
समाज	भय ग्रस्त	अभय परस्पर विश्वास और पूरक क्रिया	संतोष
प्रकृति	असंतुलन की ओर	सहअस्तित्व अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था	आनंद

लक्ष्य

- ▶ प्रकृति में मानव की भूमिका है या नहीं?
- ▶ मानव का लक्ष्य है या नहीं?
- ▶ लक्ष्य एक का या सब का मिलकर?
- ▶ क्षणिक, दीर्घ या निरंतर?
- ▶ सामयिक, स्थानीय या सार्वकालिक, सार्वभौमिक?
- ▶ मानव लक्ष्य बनाएँगे या पहचानेंगे?

प्रकृति - निरंतरता

- ▶ सर्वशुभ = सब की निरंतरता/परंपरा बने रहना
- ▶ 'सर्वशुभ में स्वशुभ समाया है।'
- ▶ शुभ=?
- ▶ समझने का क्रम:
 - ▶ प्राकृतिक, मानवीय व्यवस्था —> सर्वशुभ—> लक्ष्य—>दिशा —> सही/गलत मूल्यांकन

अध्ययन (शिक्षा) के बिंदु

- ▶ मानव (मैं)
- ▶ प्राकृतिक व्यवस्था
- ▶ मानवीय व्यवस्था

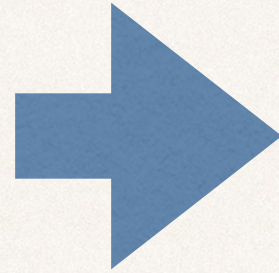
व्यवस्था

- ▶ स्वयं-स्फूर्त या दबाव-प्रभाव (शक्ति केंद्रित) से?
- ▶ शक्ति केंद्रित शासन:
 - ▶ गलती से गलती को रोकना
 - ▶ अपराध से अपराध को रोकना
 - ▶ युद्ध से युद्ध को रोकना
- ▶ मानव में स्वयं-स्फूर्त व्यवस्था का आधार:
 - ▶ शिक्षा

शिक्षा प्रक्रिया

प्रेरणा देना या प्रेरणा स्वीकारना?

- ▶ किए हुए को कराना
- ▶ सीखे हुए को सिखाना
- ▶ समझे हुए को समझाना



- ▶ निपुणता
- ▶ कुशलता
- ▶ पाण्डित्य

स्रोत

- ▶ जीवन विद्या मध्यस्थ दर्शन पर आधारित है।
- ▶ मध्यस्थ दर्शन - सहअस्तित्ववाद - जीवन विद्या अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन है।
- ▶ मध्यस्थ दर्शन - सहअस्तित्ववाद - जीवन विद्या प्रणेता श्री ए. नागराज जी (1920-2016)

“व्यापक शून्य अवकाश में स्थित अनन्त ब्रम्हाण्डों में से एक ब्रम्हाण्ड में अंगभूत
इस पृथ्वी पर वर्तमान में पाये जाने वाले मानव अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं,
क्योंकि इनको ह्रास और विकास का अध्ययन एवं प्रयोग करने का स्वर्णिम
अवसर व साधन प्राप्त है।”

– ए. नागराज

प्रणेता - मध्यस्थ दर्शन

धन्यवाद!

अशोक गोपाला - 8755665468

ashokgopala@gmail.com